(9)

सुख के सब साथी

सुख के सब साथी, दुख में न कोई
मेरे राम, मेरे राम,
तेरा नाम इक सांचा, दूजा न कोई ।

१. *जीवन आनी-जानी छाया*
झूठी माया झूठी काया
फिर काहे को सारी उमरिया
पाप की गठरी ढोए

२. *ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा*
ये जग-जोगी-वाला फेरा
राजा हो या रंक सभी का
अंत एक सा होए।

३. *बाहर की तू माटी फांके*
मन के भीतर क्यों ना झाँके
उजले तन पर मान किया
और मन की मैल ना धोई।